ing 1986-87, Rs. 160 lakhs during 1987-88, and Rs. 200 lakhs during 1988-89.

Regularisation of daily workers in M.C.D.

1186. SHRI SURAJ PRASAD: Will the Minister of URBAN DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) the number of Beldar, Watchman, Sweeper, Fitters, Assistant Meter Reader, Pump Drivers and Clerks who have been working in Municipal Corporation of Delhi and Delhi Water Supply and Sewage Disposal Undertaking on daily wages for the last 7, 5 and 3 years;

(b) whether it is a fact that Supreme Court has directed that the services of the employees, who have completed more than six months service should be regularised;

(c) if so, what are the reasons for not regularising the services of the employees working n the Water Supply Department of M.C.D.; and

(d) what actions are being taken by Government to regularise the services of these employees?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF URBAN DEVELOPMENT (SHRI DALBIR SINGH): (a) to (d) The information is being collected and will be laid on the Table of the Sabha.

अधिक उपज वाली बीज की किस्मों का विकास

1187. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव** : क्या **कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि दालों की उपलब्धता की स्थिति अभी भी खराब है और देश को इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए अब तक कोई अनुसंधान कार्य शुरू नहीं किया गया है ;

(ख) क्या भारत में अथवा विश्व में इन मदों के संबंध में कोई अनुसंधान कार्य किए गए हैं, और यदि हां, तो इस समय चल रही परियोजनाओं की अभिकरण वार संख्या कितनी है, और वे कहां-कहां स्थित हैं तथा उनके द्वारा किए मूल्यांकन के परिणाम, यदि कोई हैं तो क्या हैं ; और

(ग) क्या यह सच है कि श्री बोरलोग द्वारा गेहूं और मक्का की अधिक उपज वाली किस्मों का विकास किए जाने के पश्चात् तथा उनके आधार पर अब तक और कोई प्रगति नहीं की गई है ?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा): (क) जी हां, श्रीमन् । दालों की उपलब्धता मांग से कम है । तथापि उपयुक्त किस्मों के विकास तथा अनुकूल उत्पादन प्रौद्योगिकियों के लिए अखिल भारतीय समन्वित दाल सुधार प्रायोजना, दाल अनुसंधान निदेशालय, भा.कृ.अ.प. के संस्थानों तथा कृषि विश्वविद्यालयों के अन्तर्गत गहन अनुसंधान प्रयत्न किये गये हैं ।

(ख) जी हां, श्रीमन् । अखिल भारतीय समन्वित दाल अनुसंधान प्रायोजना के अन्तर्गत दाल अनुसंधान निदेशालय सहित 33 स्थानों में कुल 135 प्रायोजनाएं चालू हैं । केन्द्रों तथा उनके स्थानों की सूची संलग्न विवरण में दी गई है । (नीचे देखिए)

अर्ध शुष्क उष्णकटिबन्धी के लिए अन्तर्राष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (इक्रीसेट), हैदराबाद, भारत तथा इसके बाहरी केन्द्र, शुष्क क्षेत्रों में कृषि अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र (आई सी ए आर डी ए), सीरिया, उष्णकटिबन्धी कृषि के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान, नाईजीरिया तथा एशियन वेजीटेबल रिसर्च एण्ड डवलपमेंट सेन्टर, ताइवान भी दाल सुधार कार्यक्रमों पर कार्य कर रहे हैं ।

नियमित अनुसंधान प्रयत्नों के माध्यम से, उत्पादन प्रौद्योगिकियों सहित दालों की 45 उन्नत किस्में विकसित की गई हैं तथा 1980 में रिलीज की गई हैं । इन नई प्रौद्योगिकियों के अपनाने के फलस्वरूप दालों की उपज बढ़ गई यह वर्ष 1980-81 में 473 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर से बढ़कर वर्ष 1984-85 में 537 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर हो गई ।